I

Lecture series No:- 75.

Online class.
Date-2[illegible]/9/2022,
Day-Thursday.
Time-10:50 to 11:40 A.M.

Topic,

Dr. Sunita Kumari
Depart. of Philosophy.
B.A Part-II
Paper-(5.)
A.N.D. College shahpur patory,
Samastipur.

(1) Triratan

Ans:- संसार के अन्य अनेक संस्कृतियों में भौतिकवाद पर अत्यधिक बल देकर जीवन के आध्यात्मिक पक्ष की उपेक्षा कि गई है। परन्तु भारतीय संस्कृति में भौतिकवाद और आध्यात्मवाद में एक अपूर्व समन्वय स्थापित किया गया है। "भारतीयों ने सदैव ही पारमार्थिक और व्यावहारिक का (अन्तर) अन्तर ~~समझेगा~~ समझा है। पारमार्थिक

P.T.O

सुख को सर्वोच्च सुख मानते हुए भी वे जानते थे कि लोक के सुखों और कल्याण की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये।" हिन्दू-जीवन-दर्शन में सांसारिक अभ्युदय या समृद्धि और अध्यात्म-भावना के इस समन्वय का परिणाम उस सामाजिक व्यवस्था का विकास था, जिसे 'वर्णाश्रम' कहते हैं। यह वर्णाश्रम दो शब्द 'वर्ण तथा 'आश्रम' से मिलकर बना है और इनमें से प्रत्येक शब्द हिन्दू सामाजिक व्यवस्था के दो पक्षों का प्रतिनिधित्व करता है। वैदिक काल की सामाजिक व्यवस्था में वर्ण और आश्रम समाज रूपी भवन के दो सुदृढ़ आधार या स्तम्भ थे जिन पर आर्य लोगों का व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन आधारित था। और भी स्पष्ट रूप से यह कहा जा सकता है कि इस देश के

P.T.O.

साक्षात्कृतधर्मा ऋषियों ने समष्टि और व्यष्टि के कल्याणार्थ, वर्णाश्रम-व्यवस्था को जन्म दिया था। वर्णाश्रम का तात्पर्य है- वर्ण - व्यवस्था एवं आश्रम - व्यवस्था। इसे वर्णाश्रम धर्म भी कहते हैं। धर्म का तात्पर्य यहाँ नैतिक कर्तव्य या जीवन के व्यवहारिक नैतिक नियम हैं। वर्ण व्यवस्था के अन्तर्गत सम्पूर्ण समाज के सदस्यों को चार वर्णों - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र - में विभाजित किया गया है, था। और प्रत्येक वर्ण के लिए कुछ नियमों व कर्तव्यों को निर्धारित कर दिया गया था, और प्रत्येक से यह आशा की जाती थी वह उन नियमों को अपना 'धर्म' या नैतिक कर्तव्य समझकर उनका पालन करेगा।

"END"